ISSN:2583-8849



दिलीप आचार्य "सोमेश्वर"
बांसवाड़ा राजस्थान

नवगीत :" मन के दीप जलें"

जागे चेतन ज्योति जब,
भ्रम के मेघ ढलें,
करुणा के पावन पथ पर,
मन के दीप जलें।।
धूप ने आँगन छोड़ा कब का,
छाया भी संन्यासी,
भीतर-भीतर रोता मानव,
बाहर हँसी प्रवासी।
भीड़ भरे बाजारों में भी,
मन के स्वर न मिलें।।

मिट्टी के तन में अनगिन,
इच्छाओं का मेला,
क्षणिक सुख के पीछे भागे,
भूला निज अलबेला।
अंतर के गिरिधर को भूले,
जग के रंग पले।।

भूख कहीं सम्मान की जलती,
कहीं अन्न की पीर,
टूटी छत के नीचे सोती,
सपनों की तकदीर ।
फिर भी कोई वृद्ध वट-सा,
आशा-जल से पले।।
नश्वरता के इस उपवन में,
शाश्वत बीज बचाना,
अपने भीतर बैठे ईश्वर से
नाता फिर है पाना।
प्रेम-प्रार्थना के सरोवर में,
चेतन हंस मिले।।

कालचक्र की तीव्र धुरी पर,
जग का रथ है दौड़ा,
फिर भी जिसने आत्मदीप से
अपना पथ है जोड़ा।
उसके पग के चिह्न,समय
की रेतों पर न धुले।।